एक सरस भक्तिकाव्य 'राधामाधवगीताञ्जलि'

गोपीनाथ पारीक
अध्यक्ष - राजस्थान आयुर्वेद विज्ञान परिषद्
एवं साहित्य-सरोवर-संस्था

वैष्णव आचार्यों में श्री निम्बाकाचार्य का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। श्री रामानुज के बाद आप उन आचार्यों की कोटि में आते हैं, जिन्होंने वैदान्त के क्षेत्र में अपने सिद्धान्तों की स्थापना की । आप अनेक बातों में श्रीरामानुज से सहमत रहे। आपने माना कि संसार ब्रह्म से भिन्न भी है और अभिन्न भी। श्री रामानुज यही मानते हुए भी दोनों की अभिन्नता पर अधिक जोर देते हैं, परन्तु श्री निम्बार्क के अनुसार यह भिन्नता और अभिन्नता दोनों ही समान रूप से महत्त्व की है। जैसे कार्यरूप घट अपने कारण रूप मृत्तिका से अभिन्न है, क्योंकि दोनों का मूल तत्त्व एक ही है। साथ ही ये भिन्न भी है, क्योंकि दोनों के नाम, रूप, आकार, प्रयोजन आदि भिन्न भिन्न हैं। वैसे ही कार्यरूप संसार कारणरूप ब्रह्म से भिन्न और अभिन्न है। इसीलिये इनका यह मत 'द्वैताद्वैतवाद' के नाम से जाना जाता है। इनमें संसार द्वैत है और ब्रह्म अद्वैत है। दोनों नित्य सत्य हैं।

ईश्वर सगुण, निर्दोष और व्यापक है। परम ब्रह्म, नारायण, भगवान् कृष्ण, पुरुषोत्तम उन्हीं के नाम हैं। श्री निम्बार्क ने पहले राधाकृष्ण को विशेष महत्त्व दिया। इन दोनों की लीला ही सृष्टि का रहस्य है। श्री रामानुज की ऐश्वर्यप्रधान भक्ति के स्थान पर उन्होंने माधुर्यप्रधान भक्ति की शिक्षा दी। जीव और ईश्वर के सम्बन्धों में आपने माधुर्य का पुट दिया। आपने शरणागति को ही प्रमुख साधन कहा। आपने प्रस्थानत्रयी के स्थान पर प्रस्थानचतुष्टय को माना । इनमें चतुर्थ प्रस्थान श्रीमद्भागवत को स्वीकार किया।

इसी निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित रतनगढ़ निवासी वैद्य श्री धनाधीश गोस्वामी हुए। श्री जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी महाराज से जब आपने दीक्षा ली, तो श्री महाराजजी ने उन्हें 'धर्मबिहारी' यह उपनाम दिया। श्री धनाधीश 'धर्मबिहारी' ने प्रत्येक भजनस्तुति में अपनी सहधर्मिणी श्रीमती कृष्णा देवी का भी उल्लेख किया है। आपने धर्मबिहारी नाम से भजनों का प्रणयन कर भक्तों को भावविभोर किया। प्रत्येक पद के अन्त में अपने 'धर्मबिहारी' नाम के साथ अपनी सहधर्मिणी श्रीमती कृष्णा देवी का भी उल्लेख कर जीवनसङ्गिनी के प्रति

आपने उदार स्नेह भाव का परिचय दिया है। 'राधामाधवगीताञ्जलि' में आपके द्वारा रचित भावपूर्ण भक्तिमय भजनों का संग्रह है। इस संग्रह का अवलोकन कर श्री 'श्रीजी' महाराज ने कहा था - 'वैद्यजी ने श्री युगललाल श्यामा-श्याम की ललित लीलाओं का अपनी भावपूर्ण शब्दावली में सजीव चित्रण किया है। भक्तों की भावना केअनुरूप ही भगवल्लीलाओं का चिन्तन होता है। इन रहस्यमयी लीलाओं का 'राधामाधवगीताञ्जलि' में संग्रह हुआ है। अष्टसहचरी द्वारा की जाने वाली अष्टयाम सेवा की सुललित भाषा-शैली में आपने अभिव्यक्ति की है। किशनगढ़ नरेश भक्त-शिरोमणि श्री नागरीदासजी महाराज ने अपनी रचनाओं में जैसे भाव व्यक्त किये हैं, उसी प्रकार श्री वैद्यजी ने भी अभिनव स्वरूप प्रदान किया है।

मत्स्यपुराण में कहा गया है कि 'रुक्मिणी द्वारवत्यां तु राधा वृन्दावने वने' अर्थात् भगवान् श्री कृष्ण के कथनानुसार द्वारका की लीला में पट्टमहिषी श्री रुक्मिणीजी तथा वृन्दावन की लीलाओं में श्रीराधिकाजी नायिका हैं। भगवान् श्रीकृष्ण श्री राधिकाजी को सुखी करने, श्री राधिका जी श्रीकृष्ण को सुख पहुँचाने एवं समस्त गोपीजन प्रिया-प्रियतम को आनन्दित करने तथा युगल सरकार सखीवृन्द को आह्लादित करने लीलायें करते हैं। भगवान् श्रीकृष्ण श्री राधा के प्रति उद्‌गार प्रकट करते हैं -

राधिके! तुम मम जीवन-मूल।
अनुपम अमर प्रान-संजीवनी,
नहिं कहुँ कोउ सम तूल।।

श्री राधिकाजी भी प्रियतम श्रीकृष्ण के प्रति अपने प्रेमोद्‌गार प्रकट करती हैं-

हौं तो दासी नित्य तिहारी।
प्राननाथ जीवनधन मेरे, हौं तुम पै बलिहारी।।

ऐसे कृपामूर्ति युगल श्रीराधा और श्रीमाधव के गुणगान गा कर भक्त निहाल हो जाता है, वह तन्मय हो कर गाता है-

नन्द वृषभान के दोउ वारे ।
वृन्दावन की सोभा सम्पति, रति सुख के रखवारे।।
गोरी राधा कान्ह साँवरे, नख-शिख अङ्ग लुभारे।

बोलत, हँसत, चलत, चितवन छवि बरनत कविकुल हारे
धीर समीर तीर जमुना के, कुञ्ज-कुटीर सँवारे।
विविध विहारनि विहरत दोऊ, सहज स्वरूप सिंगारे।।
रसिक-अनन्य मण्डली मण्डन प्रानन हूँ के प्यारे।
जुगलकिशोर 'व्यास' के ठाकुर लोक वेद तें न्यारे।।

-श्री हरिदासजी व्यास

प्रिया-प्रियतम की सारी इन लीलाओं से प्रभुमुदित हो कर उनके अनुरूप सेवा करते रहना ही उज्जवल मधुर-रसात्मिका भक्ति है। श्री धर्मबिहारी जी द्वारा रचित इस 'राधामाधवगीताञ्जलि' में जन्म, उत्थापन, विवाह, झूलना, राजभोग, फूलबंगला, नृत्य, कुञ्जविहार, नागलीला, चीरहरणलीला, मानलीला, होली, गोवर्धन लीला, सेज बिराजना और नींद लेना आदि सभी लीलाओं-क्रीड़ाओं से सम्बन्धित सरस विविध पद हैं, जिनमें संगीत और सर्वात्मना समर्पण का मणिकांचन संयोग है।

उत्थापन -

जागो राधा-माधव प्यारे।
सखियाँ खड़ी कुंज के द्वारे।।
वीणा ललित बजावे ललिता
उत्थापन पदरस संवलिता
दर्शन हित हिय-प्रेमोच्छलिता
मधुर मधुर स्वर गीत उचारे।।

सेज बिराजना-

राधा-माधव सेज बिराजे।
शोभा निरखि काम-रति लाजे।।
श्यामा-श्याम मन्द मुसकावें
लेत जँभाई, चुटकि बजावें
सखियाँ मंगल-गीत सुनावें
कर-दर्शन में निज-छवि छाजे।।

कुंजमहिमा-

सुखमय राधा-माधव कुंज।
सखियाँ श्यामा-श्याम रिझावें
चन्दन-कमल-पराग लगावें
ले गुलाब दानी छिड़कावें
'धर्मबिहारी' कृष्णा ध्यावें, मिटे ताप के पुंज।।

श्रीराधाकृष्ण-शोभा-

राधा-माधव-छटा निराली।
मोर-मुकुट, मकराकृति कुण्डल
शीश चन्द्रिका, चन्द्रहार गल
अरुण-कपोल, अधर, कर पदतल
चन्द्रानन अलकें घुँघराली।।

श्रीराधा-कृष्ण-विहार-

राधा-माधव करत विहार, बिरज की कुंजन में।
फूल-हिंडोले युगल बिराजे, मन में मोद अपार
बारम्बार श्याम-श्यामा को, सखियाँ रही निहार
निरख फूली मन में।।

श्रीराधा-कृष्ण-छवि-

राधा-माधव की छवि प्यारी।
जलद-नीलमणि सम बनवारी
कनकलता-ज्यों कीर्तिकुमारी
कोटि काम रति मन मदहारी
सेवत मुदित सकल व्रजनारी

कुंजविहार-

राधा-माधव कुंज पधारे।
युगल खेलते वृन्दावन में

आँखमिचौनी सघन लतन में
क्रीडत कंदुक हर्षित मन में
श्रमकण मुक्ता आभा धारे।।

समर्पण-

राधा-माधव पर बलि जाऊँ ।
इनकी इच्छा में सुख मानूँ
भाग्य कभी प्रतिकूल न जानूँ
सुख में दुख में कृपा बखानूँ
सर्व सुहृद्-गुण गाऊँ।।

श्री राधाकृष्ण-दरबार-

अतुल राधामाधव दरबार।
दिव्य गोलोकभूमि अभिराम
यही है श्री वृन्दावन धाम
तिलक त्रिभुवन का परम-ललाम
बहे यमुना की निर्मल-धार।।
इन्द्र-शिव-ब्रह्मादिक आते
सनक-नारद-शुकमुनि गाते
हृदये निम्बार्क मोद पाते
भीड़ सन्तों की लगी अपार।।

अशरणशरण-

राधा-माधव परम उदार
अशरण-शरण-धणी।
दीन हीन बन जो चरणों की, शरण पड़े अकुलाय
पापी-धर्मी कछु न विचारे, लेते हृदय लगाय
देते पतितों का जन्म सुधार
अशरण-शरण-धणी।।

दास्यभाव-

राधा-माधव का मैं चाकर।
ठकुरानी वृषभानु-नन्दिनी
कुंजविहारी मेरे ठाकुर
चूक चाकरी में होने पर
सदा क्षमा करते करुणाकर।।

प्रार्थना-

निसदिन राधा-माधव ध्याऊँ।
राखूँ सदा हृदय-नयनों में
पलक नहीं बिसराऊँ।
लीला सुनूँ नयनभर निरखूँ
मुख से अविरल गाऊँ।
निसदिन राधा-माधव ध्याऊँ।।

वन्दना-

राधा-माधव के चरणों में, लाखों प्रणाम।
लेते आश्रय जो इनका तो मिटते हैं क्लेश।
दूर होते अमंगल, सुमंगल विशेष
कृष्णा धर्मविहारी के नयनाभिराम।।

इस प्रकार हम देखते हैं, कि श्री धर्मबिहारी जी ने अपने आराध्य राधामाधव की सरस लीलाओं का तथा भावभरी अपनी भक्ति का वर्णन अपनी सम्पूर्ण गरिमा, काव्यमयी समग्रता, पावन प्रेममयी निष्ठा को गेयता की लयबद्धता के साथ प्रस्तुत किया है।

श्रीराधिकाजी महाभाव की रसमयी देवी हैं, तो भगवान् माधव श्रीकृष्ण स्वयं रसराज हैं। इनकी समस्त लीलायें मधुर मनोहर भावों से ओत प्रोत हैं-

महाभाव-रसराज के मधुर मनोहर भाव।
दिव्य मधुरतम रागमय दैन्य विभूषित चाव।।

ये प्रिया-प्रियतम दोनों एक दूसरे के जीवन हैं, प्रेमाधिक्य से दोनों के प्राण भी एक ही हो गये हैं। ऐसी अद्‌भुत प्रीति विश्व में कहीं अब तक देखने-सुनने में नहीं आयी-

प्यारे जू की जीवन है नवल किशोरी गोरी
तैसी भाँति प्यारी जू को जीवन बिहारी है।
जोई जोइ भावै उन्हें सोई सोई रूचे इन्हें
एकै गति भइ ऐसी रंच को न न्यारी है।
छिन छिन देखि देखि छवि की तरंग नाना
प्रीतम दुहुनि सुधि देह को बिसारी है।
हित ध्रुव रीझि रीझि रहै इति रस भीजि
प्रीति ऐसी अब लगि सुनी न निहारी है।।

ऐसी परस्पर अलौकिकी पावनी प्रीति का रसमय भक्तिपूर्ण गीतिसंयुत वर्णन करने वाले वैद्य श्री धनाधीश जी गोस्वामी एवं उनकी सहधर्मिणी श्रीमती कृष्णादेवी जी यद्यपि अब इस धराधाम पर नहीं रहे, किन्तु उनका यशःकाय सदा सर्वदा अमर रहेगा। मैं तो श्रीरसिकेशदास 'रसिक' के शब्दों में यही याचना करता हूँ-

जिनका सुमिरत नाम होत मृदु विमल सरस चित।
युगल निकुंज विहार सरित जिन हृदय बहति नित।।
तिन रसिकनि-पग-धूरि सजीवनि मूरि बनाऊँ।
नागरि नागर नवल नेह के नीर नहाऊँ।।